17 मार्च 2022, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक

Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक प्रवचनसार पर

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

वर्ष : 44, अंक : 21
मार्च (द्वितीय), 2022 (वीर नि.संवत्-2548)

संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दो वर्ष की प्रतीक्षा के पश्चात्
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित एवं
पूज्य कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली द्वारा आयोजित

54 वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक : रविवार 15 मई से बुधवार 1 जून 2022 तक

शिविर के मुख्य आकर्षण

- ❑ सी.डी. के माध्यम से पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचन
- ❑ वृहद् विद्वत्समागम
- ❑ प्रौढ़ एवं बाल शिक्षण कक्षायें
- ❑ प्रतिदिन रोचक व ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम
- ❑ पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद का सम्मेलन
- ❑ प्रतिदिन डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन
- ❑ जैनधर्म का अध्यापन करने वाले शिक्षकों का प्रशिक्षण
- ❑ प्रतिदिन सामूहिक जिनेन्द्र पूजन, विधान एवं भक्ति
- ❑ डॉ. हुकमचन्दजी के जन्मदिवस पर तत्त्वज्ञान का संकल्प
- ❑ टोडरमल आदि महाविद्यालय में प्रवेश हेतु अपूर्व अवसर

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण

स्थान - कहान नगर, लाम रोड़, देवलाली, नासिक (महाराष्ट्र)
सम्पर्क सूत्र - श्री टोडरमल स्मारक भवन ए-४, बापूनगर जयपुर-३०२०१५ (राजस्थान)
फोन : 0141 - 2705581, 2707458

नोट - कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी आगामी अंक में शीघ्र प्रकाशित की जाएगी।

पंचतीर्थ जिनालय के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का -

10वाँ वार्षिकोत्सव सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित पंचतीर्थ जिनालय का 10वाँ वार्षिकोत्सव शुक्रवार, 25 फरवरी से रविवार, 27 फरवरी, 2022 तक विविध अनुष्ठानों सहित भक्ति-भाव से सम्पन्न हुआ। ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन परिवार पीतल फैक्ट्री जयपुर के करकमलों से हुआ। मण्डप उद्घाटन श्री ताराचंदजी सोगानी परिवार जयपुर एवं मंच उद्घाटन श्री शांतिलालजी चौधरी परिवार भीलवाड़ा ने किया।

इस अवसर पर अध्यात्मवेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के लाइव प्रवचन एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन व अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के वीडियो प्रवचन का प्रसारण किया गया। 25 व 26 फरवरी को रात्रि में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली व डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर के प्रवचनसार विषय पर व्याख्यान का लाभ मिला। (शेष पृष्ठ 3 पर..)

32 सम्पादकीय –

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

सातवें अध्याय का सार (जैन मिथ्यादृष्टियों का विवेचन)

जिनागम में व्यवहार की मुख्यता से बहुत–से उपदेश हैं, जो उसे सच्चा समझकर व्रत, शील, संयम, तप, दानादिरूप प्रवृत्ति करते हुए मात्र इन्हीं कारणों से स्वयं को धर्मात्मा मानते हैं, वे सभी व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि हैं।

व्यवहाराभासी जीव मुख्यरूप से चार प्रकार के हैं –

1) कुल अपेक्षा धर्मधारक व्यवहाराभासी।
2) परीक्षारहित आज्ञानुसारी धर्मधारक व्यवहाराभासी।
3) सांसारिक प्रयोजनार्थ धर्मधारक व्यवहाराभासी।
4) धर्मबुद्धि से धर्मधारक व्यवहाराभासी।

कुल अपेक्षा धर्मधारक व्यवहाराभासी...

बहुत–से जीव जैन कुल में पैदा होने मात्र से स्वयं को जैनी कहते हैं। वे जैन धर्म को तो जानते नहीं; कुल में जैसी प्रवृत्ति चली आ रही है, वैसी प्रवृत्ति करने से स्वयं को धर्मात्मा मानते हैं। यदि कुलानुसार प्रवृत्ति ही धर्म हो तो मुस्लिम कुल में पैदा होकर उनके धर्म के अनुसार प्रवृत्ति करने वाले भी धर्मात्मा हो जाएँगे।

लोक में भी कुल की अपेक्षा से न्याय करने की पद्धति नहीं है। न्याय में कुल के आधार से नहीं; अपितु विवेक के आधार से निर्णय लिए जाते हैं। जैसे कोई व्यक्ति चोरी करते हुए पकड़ा जाए और वह कहे कि मैं कुल परम्परा से चोर हूँ, मेरे पिताजी भी चोर थे, मेरे पिताजी के पिताजी भी चोर थे और पिताजी के दादाजी भी चोर–लुटेरे थे। हमारा तो खानदानी पेशा ही चोरी–डकैती करना है, तो क्या ऐसा कुलक्रम जानकर उसके अपराध के लिए क्षमा किया जा सकता है? नहीं; चोरी करते हुए पकड़े जाने पर कुलक्रम जानकर छोड़ते नहीं हैं; अपितु दण्ड ही देते हैं।

पण्डितजी इसी बात को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि यदि पिता दरिद्री हो वहाँ तो कुल का विचार कर दरिद्री नहीं रहता; अपितु दरिद्रता दूर करने के अर्थ अनेकों प्रयत्न करता है। पहले तो खेती करते हुए झोपड़ी में रहता था और अब बंगले में रहने के स्वप्न देखता है। शास्त्रों में अनेक ऐसे उदाहरण हैं जहाँ पिता नरक गए और पुत्र स्वर्ग में या पिता स्वर्ग में और पुत्र नरक में चले गए। अतः यहाँ कुलक्रम कैसे हुआ? यदि कुलक्रम पर ही दृष्टि हो तो फिर पिता के बाद पुत्र को भी नरकगामी होना चाहिए; इसलिए धर्म में कुल का तो कुछ भी प्रयोजन नहीं है।

पण्डितजी अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में कहते हैं कि कालदोष से जिनधर्म में भी पापी पुरुषों द्वारा कुगुरु–कुदेव–कुधर्म के सेवनादिरूप तथा विषय–कषाय के पोषणादिरूप विपरीत प्रवृत्ति चलाई गई है, अतः उसका त्याग करके जिन–आज्ञानुसार प्रवर्तन करना योग्य है।

यहाँ कोई कहे कि हमारे खानदान में तो पहले से यही परम्पराएँ चलती आ रहीं हैं, उन्हें छोड़कर नई परम्परा चलाना तो योग्य नहीं है, जो धर्म हमारे यहाँ चलता है, हम तो वही मानेंगे। पण्डितजी उससे कहते हैं कि यदि कोई अपनी बुद्धि से नई परम्परा चलाये तो वह योग्य नहीं है; परन्तु हम जो वीतरागता का मार्ग बतला रहे हैं, वह तो सर्वज्ञ के शासन की बात है; इसलिए हमारे द्वारा कहे गए वीतरागता के मार्ग को नया मार्ग समझना योग्य नहीं है। अनादि–निधन जैनधर्म का जैसा स्वरूप शास्त्रों में लिखा है, उसे मिटाकर पापियों द्वारा बीच में गलत प्रवृतियाँ चला दी गईं, उसे परम्परा कैसे माना जा सकता है? अतः पुरातन जैन शास्त्रों में धर्म का जैसा स्वरूप कहा है, वैसा ही प्रवर्तन करना योग्य है।

यदि कोई ऐसा विचार करे कि कुलक्रम से चली आ रही खोटी परम्पराओं को तो छोड़ देना चाहिए; परन्तु कुलक्रम में जो सच्ची परम्परा चल रही हैं, उन्हें तो स्वीकार करना ही चाहिए। उससे कहते हैं यदि अपने कुल में जिनदेव की आज्ञा के अनुसार अहिंसारूप धर्म की प्रवृत्ति चलती हो तो स्वयं भी वैसी ही प्रवृत्ति करना योग्य है; परन्तु कुल में चलती है मात्र इसीलिए पालन नहीं करना; अपितु उसके फलादि का भी विचार करना।

यदि कोई सच्चे धर्म को भी कुलाचार से पालता है, तो उसे धर्मात्मा नहीं कहते। यद्यपि वह सच्चे देव को ही पूजता है, कुदेवादि का सेवन भी नहीं करता; तथापि स्वयं के विवेक से निर्णय न करता हुआ पिताजी मानते हैं, इसीलिए मानता है, तो जिस दिन पिताजी मानना छोड़ देंगे उस दिन वह भी छोड़ देगा; अतः उसका मानना और आचरण दोनों ही कुल के भय से हुए; धर्मबुद्धि से नहीं।

पण्डितजी प्रकरण के अन्त में सभी बातों का निचोड़ बतलाते हुए कहते हैं कि विवाहादि कुल सम्बन्धी कार्यों में तो कुलक्रम का विचार करना; परन्तु धर्म सम्बन्धी कार्यों में कुल का विचार नहीं करना। जैसे गुजरात में ऐसी परम्परा है कि 4 फेरों में ही शादी हो जाती है तथा अन्य जगहों पर 7 फेरों में शादी होती है, तो वहाँ 4 फेरे वाली शादी को भी पूरा समझना, उसे अधूरी नहीं समझना।

लौकिक क्षेत्र में तो जहाँ जैसी परम्परा चलती हो वहाँ वैसा ही आचरण करना; लेकिन धर्म के क्षेत्र में जैसा धर्ममार्ग सच्चा है, उसीप्रकार प्रवर्तन करना योग्य है। **(क्रमशः)**

(पृष्ठ 1 का शेष...)

प्रवचनसार मण्डल विधान भव्य आयोजन

प्रतिदिन प्रात:काल तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर द्वारा लिखित 'प्रवचनसार मण्डल विधान' का भव्य आयोजन किया गया। विधान विशेषज्ञ डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने विधान में आगत महत्त्वपूर्ण तथ्यों की ओर ध्यान आकर्षित किया। विधानाचार्य पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री ने पण्डित रिमांशुजी शास्त्री, पण्डित समकितजी शास्त्री व पण्डित दिव्यांशजी शास्त्री के सहयोग से विधान सम्पन्न कराया। विधान आमंत्रणकर्ता श्रीमती कुसुमजी गंगवाल जयपुर के अतिरिक्त श्रीमती श्रीकांताबाई छाबड़ा, श्रीमती लीलादेवीजी दौसा, श्रीमती श्रीजी दिल्ली, श्री वीतराग–विज्ञान महिला मण्डल, बापूनगर एवं श्रीमती भावनाजी शिवानीजी भीलवाड़ा थे।

सामान्य से विशिष्ट तक : एक अनोखी प्रस्तुति

इस अवसर पर श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने 'सामान्य से विशिष्ट तक' नामक एक कार्यक्रम के माध्यम से स्नातकों से प्रेरणास्पद संवाद किया। स्नातकों ने अपने अंतर्मन में चल रही भावनाओं को व्यक्त करते हुए जीवन में तत्त्वज्ञान की उपयोगिता को सिद्ध किया एवं महाविद्यालय को जीवन निर्माण का केंद्र बताया। साक्षात्कार में प्रथम बैच के पण्डित महावीरजी पाटील सांगली, पण्डित वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, श्री के. सी. जैन मास्टर साहब बण्डा, इंदौर से पण्डित गौरवजी, सौरभजी शास्त्री एवं पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर आदि को आमंत्रित किया।

'भरत का अंतर्द्वंद' का संगीतमय लोकार्पण

27 फरवरी को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की बहुचर्चित कृति 'भरत का अंतर्द्वंद' का संगीतमय लोकार्पण लाइव प्रस्तुति के माध्यम से डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की ही अध्यक्षता में श्री संजयजी दीवान, श्री अशोकजी पाटनी एवं श्रीमती नमिताजी छाबड़ा के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल व श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल के निर्देशन में निर्मित तथा प्रसिद्ध गायक श्री गौरवजी सोगानी, श्रीमती दीपशिखाजी सोगानी, श्रीमती सुप्रियाजी, श्री शिवदर्शनजी द्विवेदी द्वारा मधुर स्वर प्रदत्त इस ऑडियो का संगीत–निर्देशन दीपकजी माथुर, कंपोजिंग श्री अरुणजी दिल्ली व संयोजन पण्डित पीयूषजी शास्त्री व पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री ने किया; एतदर्थ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ने सभी को प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

'भरत का अंतर्द्वन्द' नामक संगीतमय काव्य को अब आप ऑडियो के किसी भी प्लेटफार्म से सुन सकते हैं एवं कॉलर ट्यून के रूप में भी इसका लाभ ले सकते हैं।

भव्य शोभायात्रा व महामस्तकाभिषेक

27 फरवरी को श्रीजी को मनोहर पालकी में विराजमान कर पंचतीर्थ जिनालय की तीन प्रशिक्षण पूर्वक शोभायात्रा संपन्न हुई। पालकी में श्रीजी को विराजमान करने का सौभाग्य श्री संजयजी कोठारी मुंबई ने प्राप्त किया। शोभायात्रा में सर्वप्रथम धर्म–ध्वजा श्री अखिलजी इंदौर और धर्मचक्र आर्जव गोधा व श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ़ लेकर चले। पालकी उठाने का सर्वप्रथम सौभाग्य श्री सलेखजी दिल्ली, श्री राहुलजी गंगवाल, श्री अशोकजी जैन व श्री भव्यजी जैन ने प्राप्त किया। सभी ने अपने द्वार पर श्रीजी का स्वागत किया एवं विद्यार्थियों ने उत्साह व भक्ति–भाव से शोभायात्रा को यादगार बनाया। शोभायात्रा के पश्चात् अलौकिक सौंदर्ययुक्त पंचतीर्थ जिनालय में स्थित समस्त 'जिनबिंबों का महामस्तकाभिषेक' हुआ।

महाविद्यालय के विद्यार्थियों व स्नातकों द्वारा विद्वत् संगोष्ठी

इस प्रसंग पर आचार्य कुन्दकुन्ददेव विरचित प्रवचनसार के आद्योपांत स्पष्टीकरण हेतु 'प्रवचनसार मीमांसा' विषयक संगोष्ठी आयोजित हुई। 25 फरवरी को आयोजित सत्र की अध्यक्षता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने की। मुख्य अतिथि श्री बसंतभाईजी दोषी, विशिष्ट अतिथि श्री अशोकजी पाटनी सिंगापुर के अतिरिक्त श्री सुलेखजी दिल्ली व श्री अश्विनीजी दिल्ली ने मंच को सुशोभित किया। सत्र का संचालन पण्डित आकाशजी शास्त्री अमायन एवं मंगलाचरण पण्डित अभिषेकजी शास्त्री देवराहा ने किया। 26 फरवरी को दोपहर में आयोजत गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ ने की। सत्र का संचालन पण्डित अखिलजी शास्त्री मण्डीदीप एवं मंगलाचरण पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना ने किया।

परमागम ऑनर्स का वार्षिक समारोह

27 फरवरी को परमागम ऑनर्स कोर्स का वार्षिक समारोह एवं परीक्षा परिणाम घोषित हुआ। समारोह में विदुषी स्वानुभूतिजी द्वारा परमागम ऑनर्स की गतिविधियों के परिचय के उपरान्त डॉ. शांतिकुमारजी पाटील व डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा विद्यार्थियों की शंकाओं का समाधान किया गया।

भरत के अन्तर्द्वन्द्व की नाट्यरूप में प्रस्तुति

28 फरवरी को डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता में 'भरत का अन्तर्द्वन्द्व' वैराग्य–पोषक नाटक महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने प्रस्तुत किया, जिसमें निर्देशक आशुतोषजी शास्त्री सह–निर्देशक अर्पितजी शास्त्री सहित 30 विद्यार्थियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

समारोह की सफलता में पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित आकाशजी अमायन का विशेष सहयोग रहा।

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी की 300वीं जन्मजयंती के उपलक्ष्य में आयोजित....

विश्वस्तरीय सत्पथ प्रश्नमंच : साप्ताहिक ऑनलाइन एपिसोड्स में...

नागपुर : सत्पथ फाउण्डेशन के तत्त्वावधान में आयोजित पण्डित टोडरमलजी की कालजयी रचना 'मोक्षमार्ग प्रकाशक' व डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित 'पण्डित टोडरमल : व्यक्तित्व व कर्तृत्व' पर आधारित 1008 प्रश्नों की विश्वस्तरीय सत्पथ प्रश्नमंच पुस्तिका डॉ. संजीवकुमारजी गोधा व पण्डित विपिनजी शास्त्री के निर्देशन में ब्र. रजनी दीदी के विशेष सहयोग से लगभग 8500 की संख्या में विश्वभर के साधर्मियों तक पहुँच चुकी है। ज्ञातव्य है कि इसके लिए प्रत्येक शनिवार को ऑनलाइन सत्पथ प्रश्नमंच का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें पं. श्रुतेशजी सातपुते, पं. रवीन्द्रजी महाजन, पं. प्रसन्नजी शास्त्री, पं. विवेकजी टक्कामोरे, पं. आकाशजी शास्त्री हलाज का विशेष सहयोग रहता है। 25 दिसम्बर 2021 से अब तक 11 एपिसोड्स द्वारा 550 प्रश्नों पर आधारित चर्चा की जा चुकी है।

25 दिसम्बर 2021 को प्रस्तुत प्रथम एपिसोड की अध्यक्षता श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली ने की। मुख्य अतिथि श्री वज्रसेनजी जैन दिल्ली एवं विशिष्ट अतिथि श्री सुधीरजी जैन कटनी व श्री संजयजी जैन टोरंटो रहे। विद्वत्वर्ग में डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील उपस्थित थे।

1 जनवरी 2022 को सम्पन्न द्वितीय एपिसोड की अध्यक्षता श्री अनन्तराय सेठ मुंबई ने की। मुख्य अतिथि श्री प्रमोदभाई शाह अमेरिका एवं विशिष्ट अतिथि श्री प्रतीकभाई अहमदाबाद व श्री राजूभाई अहमदाबाद रहे।

8 जनवरी 2022 को आयोजित तृतीय एपिसोड की अध्यक्षता श्री अतुलभाई खारा अमेरिका ने की। मुख्य अतिथि श्री नरेशजी लुहाड़िया दिल्ली एवं विशिष्ट अतिथि श्री अखिलजी इंदौर व श्री उल्लासभाई मुंबई रहे।

15 जनवरी 2022 को चतुर्थ एपिसोड प्रस्तुत किया गया, जिसके अध्यक्ष श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, मुख्य अतिथि श्री राहुलजी गंगवाल एवं विशिष्ट अतिथि श्री राजकुमारजी अजमेरा व श्री कमलजी वोरा रहे। विद्वत्वर्ग में पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा व डॉ. धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा उपस्थित थे।

22 जनवरी 2022 को पांचवाँ एपिसोड आयोजित हुआ, जिसके अध्यक्ष श्री वसंतभाई दोशी, मुख्य अतिथि श्री विपुलभाई मोटानी एवं विशिष्ट अतिथि श्री नितिनभाई मुंबई व श्री नवीनभाई मुंबई रहे। विद्वत्वर्ग में पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर उपस्थित थे। मंगल आमंत्रण श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल जेवरी बाजार मुम्बई का रहा।

5 फरवरी 2022 को छठवें एपिसोड की अध्यक्षता श्री अशोकजी जैन जबलपुर ने की। मुख्य अतिथि श्री पौरांगजी पारीक अमेरिका एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. श्रेयांशजी शास्त्री व श्री अनुभवजी जबलपुर रहे। विद्वत्वर्ग में पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर उपस्थित थे। मंगल आमंत्रण श्री दि. जैन मुमुक्षु मण्डल जबलपुर का रहा।

12 फरवरी 2022 को सातवाँ एपिसोड श्री पंकजजी दुबई की अध्यक्षता में प्रस्तुत हुआ। मुख्य अतिथि श्री पवनजी दुबई एवं विशिष्ट अतिथि श्री स्वीटूजी शाह दुबई व श्री शोभनाजी शाह दुबई रहे। विद्वत्वर्ग में डॉ. वीरसागरजी दिल्ली व पण्डित नीतेशजी शास्त्री दुबई थे। मंगल आमंत्रण श्री दिग. जैन समाज दुबई UAE का रहा।

19 फरवरी 2022 को आठवाँ एपिसोड श्री हिमांशुजी जैन अमेरिका की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि श्री आलोकजी जैन अमेरिका एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. हेमन्तजी शाह, श्री कल्पेशजी शाह व श्री विक्रमजी शाह रहे। विद्वत्वर्ग में ब्र. हेमचंदजी भोपाल उपस्थित थे। मंगल आमंत्रण इंटरनेशलन जैन संघ अमेरिका का रहा।

26 फरवरी 2022 को नौवाँ एपिसोड श्री रतीलालजी सुमरिया नैरोबी की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि श्री प्रफुल्लजी नैरोबी एवं विशिष्ट अतिथि श्रीमती बिन्दुबेन व श्रीमती दक्षाबेन रहे। विद्वत्वर्ग में पण्डित शैलेशभाई तलोद उपस्थित थे। मंगल आमंत्रण श्री दिग. जैन मुमुक्षु मण्डल नैरोबी केन्या का रहा।

5 मार्च 2022 को दसवें एपिसोड की अध्यक्षता श्री प्रदीपजी–कुसुमजी चौधरी किशनगढ़ ने की। मुख्य अतिथि श्री आई. एस. जैन मुम्बई एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. जे. के. शाह मुम्बई व श्री राहुलजी गंगवाल रहे।। मंगल आमंत्रण श्री दिग. जैन मुमुक्षु मण्डल किशनगढ़ का रहा।

12 **मार्च** 2022 **को ग्यारहवाँ एपिसोड** श्री निहालचन्दजी–अचरजदेवी जयपुर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि श्री रवीन्द्रजी सोगानी जयपुर एवं विशिष्ट अतिथि श्रीमती ममताजी जैन व श्री अजयजी गोधा जयपुर रहे। विद्वत्वर्ग में श्री विनयजी पापड़ीवाल जयपुर उपस्थित थे। आमंत्रणकर्ता श्री दि. जैन तेरहपंथी बड़ा मन्दिर जयपुर रहा।

ज्ञातव्य है कि सभी एपिसोड्स डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर की विद्वत् उपस्थिति एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर के संचालन में सम्पन्न हो रहे हैं। विशेष जानकारी हेतु सत्पथ के टेलीग्राम ग्रुप को जॉइन करें।

मेरा कुछ विनम्र निवेदन है

जयपुर पंचकल्याणक के 10वें वार्षिक महोत्सव में विशेष आमंत्रण पर स्मारक जाने का मुझे सुअवसर प्राप्त हुआ।

इस 40 वर्ष के कालखण्ड में स्मारक में आमूलचूल परिवर्तन हुआ है। मैं वहाँ की व्यवस्था देखकर काफी प्रभावित हुआ। जब मैं वहाँ पढ़ता था, तब पहले बैच में केवल 13 छात्र ही थे और शास्त्री अध्ययन तक 55-60 ही छात्र अध्ययनरत थे। आज यही संख्या 200 के ऊपर पहुँची है। विशेष बात यह है कि छात्रों की इतनी संख्या बढ़ने पर भी शैक्षणिक स्तर में कोई भी कमी नहीं आई। वही गुरुदेवश्री के प्रवचन, पूजन, विभिन्न कक्षाएँ, साप्ताहिक विचार गोष्ठी, भक्ति आदि कार्यक्रम निरन्तर संचालित हो रहे हैं।

स्मारक को छोडने के बाद अनेकों ऐसे स्नातक हैं जिन्होंने कभी पुन: स्मारक के दर्शन नहीं किए; उन तमाम स्नातकों से कहना चाहता हूँ कि – पुरानी यादें पुनर्जीवित करने एवं वर्तमान विद्यार्थियों को आपने सामाजिक–शैक्षणिक अनुभव प्रदान करने की भावना से स्मारक जाने का कार्यक्रम निश्चित करें। स्मारक पधारने वाले स्नातकों के लिए अनेकों सुविधायें प्रदान की जाती हैं। जैसे अप–टु–डेट रूम तथा नि:शुल्क भोजन।

स्मारक में छोटे दादा का निरन्तर वास रहता है, उनके चरणों में बैठकर कुछ न कुछ नया सीखने को मिलेगा, जिससे नई उर्जा मिलेगी। श्री बाबूचाचा(गोदिकाजी), श्री परमात्मप्रकाशजी, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी, श्री विपीनजी, श्री अध्यात्मप्रकाशजी आदि सभी आपके स्वागत के लिए निरन्तर तैयार हैं। आपके सहपाठी श्री शान्तिकुमारजी पाटील, पीयूषजी, जिनकुमारजी, दीपकजी, श्रीमंतजी, रूपेन्द्रजी, गौरवजी, जिनेन्द्रजी, आकाशजी आदि अपना योगदान दे रहे हैं। इनसे मिलकर भी आपको विशेष आनंद आयेगा।

आप जो भी दैनिक प्रवचन, पाठशाला, पंचकल्याणक, विधानादि कार्य करते हैं उसके समाचार जैन पथप्रदर्शक व वीतराग–विज्ञान में प्रकाशित करने के लिए निरन्तर भेजना। अभी महाविद्यालय का नया सत्र चालू हो रहा है। आप के यहाँ शास्त्री प्रवेश इच्छुक छात्रों को स्मारक तक पहुँचाने का कष्ट करना।

स्नातक परिवार के एक महासम्मेलन की रूपरेखा पीयूषजी के पास तैयार है। एक हजार स्नातक और उनके परिवार के आवास की व्यवस्था एक ही जगह पर हो रही है। अभी वार्षिकोत्सव में शुद्धात्मप्रकाशजी ने कहा कि सालभर में 2-3 ऐसे कार्यक्रम आयोजित करेंगे, जिसमें स्नातक और वर्तमान विद्यार्थी खुलकर चर्चा कर सकें; ताकि दोनों पीढ़ियों का जनरेशन गैप कम हो सके।

अत: पुन: एक बार स्नातको आग्रह करता हूँ कि ऐन–केन प्रकारेण स्मारक से जुड़ना चाहिए। **– महावीर पाटील, सांगली**

महीपालजी बने समन्वय समिति के महामंत्री

बाँसवाड़ा : तीर्थराज सम्मेद शिखर समन्वय समिति की बैठक श्री कमलसिंहजी रामपुरिया की अध्यक्षता एवं एम.पी. अजमेरा (रांची) के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुई।

सभा में श्री कमलसिंहजी एवं अजमेराजी ने गत बैठकों एवं समिति द्वारा किए गए कार्यों की जानकारी सदन में रखी। समिति सदस्य कुन्तीलालजी जैन ने बताया कि बैठक में विचार–विमर्श कर सर्वसहमति से कुछ निर्णय लिए गए हैं। जैसे – पर्वत वन्दना की पवित्रता अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए जूते–चप्पल के स्थान पर कपड़े के मोजे पहनें, वन्दना के लिए ड्रेसकोड, गले में केशरिया दुपट्टा, प्रचार–प्रसार हेतु सभी धर्मशालाओं एवं पहाड़ पर फ्लैक्स बोर्ड लगाना, टोंकों पर बंदरों को अपवित्रता करने से रोकने के लिए प्रत्येक टोंक पर एक कर्मचारी नियुक्त करना आदि।

समिति अध्यक्ष श्री रामपुरियाजी ने महामंत्री पद पर श्री महीपालजी ज्ञायक को एवं कोषाध्यक्ष की जिम्मेदारी श्री प्रवीणजी जैन दिल्ली को सौंपी। श्री महीपालजी पारमार्थिक ट्रस्ट बाँसवाड़ा के अध्यक्ष, श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट के महामंत्री, श्री कुन्दकुन्द कहान शाश्वत पारमार्थिक ट्रस्ट के ट्रस्टी हैं।

बैठक में श्री कमलजी, श्री सुभाषजी (गुणायतन), श्री अजयकुमारजी (बीसपंथ कोठी), श्री प्रदीपजी कोचर (भोमिया भवन), सुरेशजी बोथरा, प्रशांतकुमारजी ट्रस्टी, श्री दिनेशजी गंगवाल (कलकत्ता) और श्री दीपकजी नेपानी को अलग–अलग जिम्मेदारी सौंपी गईं। बैठक में दिगम्बर न्यास बोर्ड झारखण्ड, सरकार के अध्यक्ष श्री ताराचंदजी ने सरकार की तरफ से पूरे सहयोग का भरोसा दिलाया। महामंत्री श्री महीपालजी ज्ञायक ने सभी महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त किया गया।

समयसार रथ : टोडरमल स्मारक के परिसर में

जयपुर : यहाँ 12 मार्च 2022 को देशभर में 75 स्थानों पर समयसार का शंखनाद कर तथा 25 स्थानों पर समयसार कीर्ति–स्तम्भ को स्थापित करता हुआ समयसार रथ पं. नागेशजी पिड़ावा के निर्देशन में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के द्वार पर पहुँचा।

रथ के स्वागत में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा संचालित सभा में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील एवं श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने ग्रंथाधिराज समयसार व आचार्य कुन्दकुन्द के महत्त्व का गुणगान किया। डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने रथ पर स्वस्तिक बनाया। ज्ञातव्य है कि रथ का संचालन पारमार्थिक ट्रस्ट व तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई द्वारा किया जा रहा है।

• द्वितीय शतक : रोला शतक •

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

एकत्व–विभक्त आत्मा

इस जग की तुम केवल चिन्ता ही करते हो।
कुछ भी करना अरे किसी का शक्य नहीं है।।
जग की चिन्ता छोड बन्धु अपने में आओ।
अपने में ही जमो–रमो अपने को ध्याओ।। ६६।।

सदाचार से रहो शुद्ध–सात्विक भोजन लो।
और अहिंसक वृत्ति ही अनुपम वृत्ति है।।
न्याय–नीति से वर्तन करना अनुपमेय है।
पर यह सबकुछ सहजभाव से ही करना है।। ६७।।

सहजभाव से करना क्या सब कुछ होना है।
सहजभाव ही तो सच्चा मुक्ति का मग है।।
असहज होना ही भव है भव का मग भाई!।
कर्त्तापन के बोझे से असहज रहते हो।। ६८।।

कर्त्तापन का बोझ उतारो सहजभाव से।
सहजभाव से सहज सहजता में आ जावो।।
आना–जाना तो केवल भाषा है भाई!
आना–जाना कहीं नहीं है मुक्तिमार्ग में।। ६९।।

अपने में ही रहना है बस नन्तकाल[१] तक।
अपने में ही रहना है बस केवल मुक्ति।।
मुक्ति तो केवल अपनी परमात्म दशा है।
सहजानन्दी एवं परमानन्ददशा है।। ७०।।

आतम की दुर्दशा अहो यह भवसागर है।
इसमें रहना ही आतम की मजबूरी है।।
अरे आज तक इसमें रहकर नन्त[२] दुख सहे।
और धर्म के नाम करी बस मजदूरी है।। ७१।।

१. अनंतकाल, २. अनंत

काललब्धि आने पर सब कुछ समझ आवेगा।
समवायों के मिलने पर ही काम बनेगा।।
धीरज धारो धीरजता ही एक मार्ग है।
यथासमय सब सहजभाव से सबकुछ होगा।। ७२।।

शान्त शान्त तुम सहजभाव से शान्त रहो तुम।
आकुलता से तो कुछ भी न होना जाना।।
सब कुछ पहले से निश्चित सर्वज्ञ जानते।
उसमें कुछ भी बदल नहीं हो सकता भाई!।। ७३।।

जो कुछ जैसा आज हो रहा है दुनियाँ में।
उसके बारे में वर्द्धमान से पूँछा जाता।।
बतलाते या नहीं तुम्हारा मन क्या कहता?।
बतला देते तो फिर तो सब नक्की ही था।। ७४।।

वे शान्त रहे उनको कुछ भी परिणाम न आया।
सहजभाव से रहे जानते और देखते।।
अनन्तवीर्य के धनी किन्तु कुछ भाव न आया।
फिर तुम भी क्यों इतने आकुल–व्याकुल होते।। ७५।।

उनके सुख में रंचमात्र भी भंग पड़ा ना।
सहजभाव से शान्तभाव से रहे जानते।।
तुम इतने नीचे–ऊपर क्यों होते भाई!।
सहजभाव से अपने में ही रहो निरन्तर।। ७६।।

सहजभाव से ही रहते हैं सभी जिनेश्वर।
वे ही हैं आदर्श हमारे सब जग जाने।।
क्यों न चलें हम उनके ही मारग पर भाई!
और न कोई मार्ग निरापद है इस जग में।। ७७।।

सहजभाव से ज्ञाता–दृष्टा रहना ही तो।
एकमात्र है राह सुखी होने की भाई!।।
सभी जिनेश्वर देव चले हैं इसी राह पर।
इतनी सीधी बात समझ में क्यों न आई?।। ७८।।

(क्रमशः)

कुंदकुंद कहान तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट का नवट्रस्ट मंडल

बाँसवाड़ा : आध्यात्मिकसत्पुरूष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सदुपदेश से संस्थापित श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट गत 45 वर्षों से जिनवाणी की सेवा तथा तीर्थों की सुरक्षा का कार्य कर रहा है। इस संस्था द्वारा स्थापित श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर अभूतपूर्व सफलताओं के साथ जिनवाणी प्रचार–प्रसार में संलग्न है। फलस्वरूप आज लगभग 1000 से अधिक स्नातक जैनधर्म के मर्म को देश–विदेश में प्रसारित कर रहे हैं। ट्रस्ट तथा पदाधिकारी शिखरजी, गिरनारजी जैसे तीर्थों की सुरक्षा एवं अन्य तीर्थों के जीर्णोद्धार के लिए हमेशा कटिबद्ध रहते हैं।

27 फरवरी 2022 को श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट की मीटिंग भूतपूर्व ट्रस्ट अध्यक्ष एवं वर्तमान ट्रस्टी श्री अनंतभाई सेठ के निवासस्थान मुंबई में सम्पन्न हुई। श्री अनन्तभाई सेठ ने स्वयं की अस्वस्थता के चलते समस्त ट्रस्टियों के समक्ष ट्रस्ट के अध्यक्षपद से निवृति का प्रस्ताव रखा। समस्त ट्रस्ट मण्डल ने उनसे अध्यक्षपद पर आसीन रहने का आग्रह किया; परन्तु उन्होंने अध्यक्षपद का त्यागकर पदाधिकारियों के अति आग्रहवश आजीवन ट्रस्ट के ट्रस्टी पद पर और परम शिरोमणि संरक्षक के रूप में मार्गदर्शन करने की स्वीकृति प्रदान की।

श्री अनन्तभाई और उनके परिवार द्वारा निरपेक्ष भाव से अबतक ट्रस्ट की सेवा के कारण समस्त पदाधिकारियों ने उनका बहुमान व आभार व्यक्त किया। परिवर्तित ट्रस्टमण्डल में ट्रस्ट के महामंत्री श्री वसंतभाई दोषी को अध्यक्षपद पर मनोनीत किया गया। श्री वसंतभाई गत 45 वर्षों से ट्रस्ट को अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। ऑल इंडिया लीगल कमेटी, जो तीर्थसुरक्षा के कार्यों में अग्रणी रहती है, उसके आप आजीवन अध्यक्ष हैं।

ट्रस्ट के महामंत्री पद पर बाँसवाड़ा के श्री महीपालजी ज्ञायक (शाह) को मनोनीत किया गया। मीटिंग में उपस्थित समस्त ट्रस्टियों ने आप दोनों के द्वारा की जारही जिनशासन की प्रभावना के कार्य की अनुमोदनापूर्वक शुभकामनाएँ प्रेषित कीं।

अब ट्रस्ट में अध्यक्ष – श्री वसंतभाईजी दोशी (मुंबई), उपाध्यक्ष – श्री पदमजी पहाड़िया (इंदौर) एवं श्री आलोकजी जैन (कानपुर), महामंत्री – श्री महीपालजी ज्ञायक (बाँसवाड़ा), मंत्री – श्री विनुभाई शाह (मुंबई), कोषाध्यक्ष – श्री चम्पालालजी भंडारी (बैंगलौर), सह–कोषाध्यक्ष – श्री भरतभाई टिम्बडिया (कोलकाता) को मनोनीत किया गया।

भक्तामर विधान एवं सत्पथ सत्संग सम्पन्न

नागपुर : यहाँ 26 व 27 फरवरी 2022 को सत्पथ पाठशाला के वार्षिकोत्सव के अन्तर्गत श्री भक्तामर मण्डल विधान एवं सत्पथ सत्संग का भव्य आयोजन किया गया।

27 फरवरी को प्रात: श्रीजी की शोभायात्रा पूर्वक भक्तामर मण्डल विधान पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। पण्डित विपिनजी शास्त्री ने संस्था व उसकी गतिविधियों का परिचय देते हुए आगामी योजनाएँ प्रस्तुत कीं। पूर्व–संध्या 26 फरवरी को जिनेन्द्र भक्ति, पाठशाला के छात्रों द्वारा विशेष प्रस्तुतियाँ एवं श्री शैलेषजी सदरवालों द्वारा 'सत्पथ गीत' के उपरान्त पण्डित संजयजी शास्त्री ने पण्डित टोडरमलजी की कथा सुनाई। संचालन पण्डित श्रुतेशजी सातपुते ने किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री नरेशजी सिंघई के संयोजन एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

तृतीय वार्षिकोत्सव एवं बीस तीर्थंकर विधान

दाहोद : यहाँ श्री दिगम्बर जैन नवा तेरापंथी पंच ट्रस्ट के तत्त्वावधान में 28 फरवरी से 4 मार्च 2022 तक भगवान वासुपूज्य की प्राण–प्रतिष्ठा का तृतीय वार्षिकोत्सव प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

युवा विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा प्रात: ग्रंथाधिराज समयसार की 49वीं गाथा, दोपहर में क्रमबद्धपर्याय एवं सायंकाल संयमप्रकाश ग्रन्थ पर प्रवचन के माध्यम से धर्म प्रभावना की गई तथा डॉ. विवेकजी शास्त्री के द्वारा बीस तीर्थंकर विधान श्री राकेशजी शास्त्री व श्री वीरेन्द्रजी शास्त्री के संयोजन में हुआ।

इस प्रसंग पर 01 मार्च को विद्वत् निवास हेतु महेन्द्र भवन का शिलान्यास, 04 मार्च को शिखर का ध्वज–परिवर्तन हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम में पाठशाला के बालक–बालिकाओं द्वारा हमारे आदर्शों पर कविता, कवि–सम्मेलन, नृत्य आदि अनेक रोचक कार्यक्रम हुए। कार्यक्रम की सफलता में श्री नितिनभाई दोषी, श्री अनन्तभाई झांझरी, श्री मिलनभाई भूता, श्री पावेसभाई दोषी, श्री शीतलभाई सर्राफ का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

महाविद्यालय का यश : विद्यार्थियों का संघर्ष

जयपुर : यहाँ 07 फरवरी 22 को केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 59वीं अखिल भा. शास्त्रीय स्पर्धा 2021-22 में राजस्थान राज्य स्तरीय शास्त्री स्पर्धाओं में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक पण्डित मंथनजी शास्त्री मुम्बई ने शास्त्रार्थ में द्वितीय पदक एवं पण्डित पवित्रजी शास्त्री आगरा ने बौद्ध दर्शन सम्भाषण में प्रथम पदक प्राप्त किया; एतदर्थ हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रेरक व्यक्तित्व : ब्र. यशपालजी (अण्णाजी) की –
प्रथम पुण्यस्मृति सभा सम्पन्न

जयपुर : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में रविवार 06 मार्च 2022 को सायंकाल पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के प्रकाशन मंत्री बाल ब्र. यशपालजी की प्रथम पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल व श्री सुशीलकुमारजी गोदिका की उपस्थिति में सम्पन्न इस सभा में श्री शुद्धात्मप्रकाशजी ने अन्नाजी के सरल व्यक्तित्व, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील ने प्रेरक व्यक्तित्व एवं पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने क्रान्तिकारी व्यक्तित्व की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किए।

ब्र. यशपालजी के वीडियो प्रवचन-प्रसारण के पश्चात् विद्यार्थियों में सोहम शाह सोलापुर ने 'ब्र. यशपालजी की जीवनयात्रा एक विहंगावलोकन' सुष्मित जैन सेमारी ने 'ब्र. यशपालजी का साहित्यिक अवदान' आदित्य जैन फुटेरा ने 'कंठपाठ योजना और ब्र. यशपालजी' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

इसके अतिरिक्त समकित जैन ईसागढ़ द्वारा काव्य पाठ एवं आशुतोष जैन आरोन द्वारा सेंड एनिमेशन की प्रस्तुति दी गई।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने अन्नाजी से जुड़े अनेक अनसुने प्रसंगों का स्मरण किया एवं उनके द्वारा संस्था में दिए गए योगदान की प्रशंसा करते हुए कहा कि वे करणानुयोग के विशेषज्ञ विद्वान थे एवं अध्यात्म गर्भित करणानुयोग ही उनकी विशेषता थी।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा कि प्रतिवर्ष यह दिवस 'जिनवाणी कण्ठस्थ दिवस' के रूप में मनाया जाए एवं वर्षभर में सर्वाधिक कण्ठपाठ सुनाने वाले विद्यार्थी को 'ब्र. यशपालजी श्रुत-आराधक' पुरस्कार से सम्मानित किया जाए। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन व संचालन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

तत्त्व प्रचार व संस्कारों को नया आयाम देगा

ARHAM ANNUAL FEST 2022

April 14 to 17, 2022

संस्कारित बच्चे सुनहरा भविष्य

ATTRACTION OF FEST

- हेरिटेज वॉक (जयपुर के प्रसिद्ध मंदिरों के दर्शन एवं टोडरमलजी द्वारा **हस्तलिखित मोक्षमार्ग प्रकाशक प्रतिलिपि** के दर्शन)
- जवाहर कला केंद्र में **म्यूजिक कंसर्ट**
- **धार्मिक संस्कार** के महत्त्व को देखते हुए नये रूप में नया आयोजन
- **पर्सनल टाइम विथ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल**
- जयपुर के विश्व प्रसिद्ध **महावीर जयंती जुलूस** देखने का अवसर
- दुनियाभर की **जैन युवा प्रतिभाओं से मिलने का अवसर**
- दुनिया का पहला **JAIN YOUTH** के लिए रोचक कार्यक्रम
- अर्हं अध्यापकों व अनेक विद्वानों से मिलने का अपूर्व अवसर
- **10 वर्ष से 25 वर्ष के आयु वालों को मुख्यता**
- **फिजिकल इवेन्ट** ❑ **लिमिटेड सीट्स**

रजिस्ट्रेशन के लिए व्हाट्सएप करें – 8949033694

वेन्यू – टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर – 302015

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

प्रकाशन तिथि : 13 मार्च 2022

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रति,